पूर्ववृत्तकथ्य
द्वितीय सप्तार.

प्रियतन्त्राभ्यामृत पिपासुव्यक्तिगण !!!

आपने हमारी वैदिक मन्त्रसिद्धि को जिस आदर से अपनाया और उस के द्वारा लाभ उठाया उस के लिये हम आपकी गुणग्राहकता के विशेष कृतज्ञ हैं। क्यों कि आपही की कृपासे यह परिवर्द्धित द्वितीयावृत्ति प्रस्तुत करने का सुअवसर उपस्थित हुआ है। इस आवृत्ति में हम ने बहुत से सिद्धप्रयोगों का समावेश कर दिया है आशावान् हैं कि इसके द्वारा आप के मनोरथों की सिद्धिअवश्य होगी॥

संपादक और अनुवाद कर्त्ता

१० विजया १९७०
गुरुवार

ब्रजरत्न भट्टाचार्य्य,
पटवर गंज स्ट्रीट
मुरादाबाद यू. पी.

अथ

श्रीविनायककल्पः ।

ब्रह्मरत्न भट्टाचार्य कृत

कल्पसुन्दरी

भाषा व्याख्यासहित

ओंएकदन्तायनाथायमन्त्रसिद्धिकरायच।
नमोऽस्तुगणराजायउच्छिष्टायमहात्मने।१।

अथ श्रीविनायकमन्त्रः " ओं क्षां क्षीं ह्रूं हूं क्रों क्रें फट् स्वाहा " इति । उच्छिष्टोभूत्वा कृष्णाष्टम्यां कृष्णचतुर्दश्यां वा अष्टोत्तरशत जपेनसिद्धिर्भवति

कृष्णपक्षकीअष्टमी अथवा चतुर्दशीको उच्छिष्टहोकर " ओं क्षां क्षीं ह्रूं हूं क्रों क्रें फट् स्वाहा" इसमन्त्रको १०८ बार एकाग्रमनसे जप करै तौ मन्त्र सिद्ध होजाता है । स्मरणरहै । जिस मन्त्र का नित्य जप किया जाय उस का कीलक दूर हो जाता है ॥

अथाङ्गन्यासः । ओं क्षां हृदयायनमः । ओं क्षीं शिर से स्वाहा । ओं क्षूं शिखायैवषट् । ओं क्षैं कवचायहुम् । ओं क्षौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ओं क्षः अस्त्रायफट् ।

इस प्रकार पाठ करते समय मूलमें जिस२ अंगका नाम आया है, उसका स्पर्श करना चाहिये ।

नतिथिर्नचनक्षत्रंनोपवासंविधीयते ॥
हन्तिकार्याणिशत्रूणांसाधनंतत्रकारणम् ।२

शत्रुओंका कार्य नाशकरनेके लिये तिथि और नक्षत्र इत्यादि शुभमहूर्त देखकेप्रयोग करनेकीआवश्यकतानहीं, औरव्रतभीनहींकरनाचाहिये । केवल मंत्रका साधनही भली प्रकारकरनेसे उनकेसबकार्यनष्ट होतेहैं

---

*" जिन पाठकोंको यह सन्देह होकि–'नेत्रत्रयाय वौषट्के कौनसा अंगस्पर्श करें क्योंकि मनुष्य के केवलदो हीनेत्रहोतेहैं । वेमहाशयस्वद्वाराअपनीशंकासमाधान करें,

निम्बवृक्षोद्भवकाष्ठ स्य अङ्गुष्ठप्रमाणं गणपतिः कार्यः। एकान्ते स्थापयित्वा ईप्सितस्त्रियो नाम लिखेत्। अष्टोत्तरं शत जापेन सद्य आकर्षणं भवति।

एक अंगुल की बराबर नीमकी लकड़ी लेकरगणेश जी की मूर्त्ति बनावे। उसे एकान्तमें स्थापन कर के अभिलषित स्त्रीका नाम लिख २ कर १०८ बार मंत्रको जपै तो तुरन्त आकर्षण होता है॥

अष्टाविंशति राजवश्यो भवति॥

गणपतिं स्थापयित्वा राजानमा लिखेत्, अष्टोत्तरशत जपेनसद्यो ह्याकर्षणं भवति गणपतिकुक्षिस्थितो जपेदिष्टसिद्धिर्भवति

उक्त सिद्धमन्त्र को २८ बार जपकरने से राजा वस में होता है॥ निम्ब काष्ठ से बनीहुई गणेशजीकीमूर्त्ति

को स्थापित करके राजा का नाम लिखे १०८ वार जप करने से आकर्षण होता है। और गणेशजी की मूर्तिके एक ओर स्थित होकर जप करने से मनोरथ की सिद्धि होती है॥

मस्तके कृत्वा अष्टोत्तर शतजपेत स्वकार्य सिद्धिः। अष्टोत्तर शत कनक पुष्पाणि मन्त्रेण सह विनायको परिनिक्षिपेत् स्वकार्यसिद्धिः। राज्ञां चाकर्षणं करोति॥

गणेशजी की मूर्ति को मस्तक के ऊपर धारणकर उक्त मंत्र का १०८ वार जप करने से संपूर्ण कार्य सिद्ध हो जाते हैं। तथा धतूरे के १०८ पुष्पों को मन्त्र पढ़कर गणेशजी के ऊपर चढ़ावे तो इष्ट सिद्धि होती है। और राजा का आकर्षण होता है॥

स्त्रीणां वामपादपांशुगृहीत्वा स्त्री प्रतिमांकृत्वा वामहस्तेच गणपतिं गृही-

त्वा तस्योपरि पांशुप्रतिमां निक्षिपेद ष्टोत्तर शताभि मन्त्रितेन स्त्रीणामाकर्षणं भवति ॥

स्त्रियों के वायें पैर के नीचेकीधूल(मिट्टी)लेकर स्त्री की मूर्ति बनवावे, औरवायें हाथ में गणेशजीकी मूर्ति को धारण करे इस प्रकार १०८ वार मंत्र पढ कर गणेश जी के ऊपर मिट्टी की मूर्ति को चढादेने से स्त्रियोंका आकर्षण होता है ॥

वामहस्ते गणपतिं गृहीत्वा अष्टोत्तर शत मन्त्रजपेन पुष्पपत्र फलानि यस्मै दीयन्तेसवश्यो भवति । गणपतिं स्थाप्य अष्टोत्तर शत जपेन श्रीखण्डं होमयेत् राजवश्यो भवति । तेन भस्मना तिल तैलन सह आत्म मुखंलेपयेत् सर्व जन

वश्योऽयं प्रयोग ॥

बायें हाथमें गणेशजी को लेकर १०८ वार मंत्र से अभि मंत्रित करके पुष्प, फल, और पत्र जिसे दिये जांय वोह वस में हो जायगा। तथा गणपतिकी मूर्ति की स्थापन करके मन्त्र को १०८ वार जप कर चन्दन से होम करे तो राजा वस में होताहै। और उस होम की भस्म को तिल के तेल में मिला कर मुखके ऊपर लेप करने से सब वस में होजाते हैं॥

मन्त्रेण सह कनक समिधा होमयेत् सर्वे वश्या भवन्ति ॥

मन्त्र पढ़ २ कर धतूरेकी समिधाओं से होम करे तो सब संसार वश में होजाता है॥

अङ्गुष्ठप्रमाणेनतिलकाष्ठ समिधाः कृत्वा होमयेत्। तद्भस्म स्त्रिया वामपादे पुरुषस्यदक्षिणपादेनिक्षिपेतद्वश्यो भवति

तिल के काष्ट की एक २ अंगुल भर समिधा लेके मन्त्र पढ पढ कर होम करे और उस की भस्म को स्त्री के बायें एवं पुरुष के दाहिने पैर के ऊपर छोड़दे तो परस्पर द्वेष होजाता है ।

हवन भस्म तिल तैलेन गोरोचन मिश्रिता अंजनंकरोति यावद्ब्रह्माशिष्टंस्थितं तावद्वश्यो भवति । श्वेत विष्णुक्रान्ता पुष्पाणि विनायको परिनिक्षिपञ्जगद्वश्यो भवति ॥

हवन की भस्समें तिलका तेल औरगोरोचन मिला कर नेत्रों में लगाने से सब वस में हो जाते हैं । श्वेत विष्णु क्रान्ता के पुष्पों को मंत्र पढ पढ कर गणेशजी के ऊपर चढाने से सम्पूर्ण संसार बस में होजाताहै ।

इतिश्रीब्रजरत्नभट्टाचार्य मुरादाबाद निवासीकृत

उच्छिष्ट विनायक कल्प समाप्त ।

श्रीः

आसुरी कल्प

ब्रजरत्न भट्टाचार्य कृत बाल सुन्दरी भाषाटीका सहित

नतिथिर्नचनक्षत्रनोपवासंविधीयते। हन्ति कार्याणिशत्रूणांसेवनंतत्रकारणम् ॥ १ ॥

शत्रुओंका कार्य नाश करने के लिये किसी तिथि और नक्षत्र अर्थात्—शुभ महूर्तकी, अथवा किसीप्रकार का उपवास करने की भी कोई आवश्यकता नहीं है, केवल इस ग्रन्थ के अनुसार विधि पूर्वक कार्य करनेसे शत्रुओं के कार्य का नाश और स्वकीय मनोरथों की सिद्धि होती है ॥ १ ॥

अथाङ्गन्यास । ओं अस्य श्री आसुरी मन्त्रस्याथर्वणऋषिः इतिशिरसि। अव्या हतिच्छन्दःइतिमुखे ओंआसुरीदेवताइति

हृदयेहुंबीजम् । फट्शक्ति इतिगुह्य ।स्वाहा कीलकम्, इति पादयोः मम चतुर्विध पुरुषर्थे सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।२।

ओं अस्य श्री आसुरी मन्त्रस्याथर्वण ऋषिः । यों कह कर सिर का स्पर्श करें । इसी प्रकार जिस २ अंग का नाम लिखा है उसी उसी का स्पर्श करना चाहिये ॥ २.॥

अथहृदयादि न्यासः । ओं कटु के कटुक पत्रे हुं फट् स्वाहा हृदयाय नम । ओं शुभगे हुं फट् स्वाहा शिरसे स्वाहा । ओं आसुरी रक्तवाससे स्वाहा शिखायै वौषट् । ओं अथर्वणस्य दुहिते हुं फट् स्वाहा कवचायहुम् । ओं अघोरे अघोर कर्म कारके हुं फट् स्वाहा नेत्रत्रयाय वौ

षट् । ओं हुं फट् स्वाहा अस्त्रायफट् ।

इस का पाठ करते समय मूल में जिस जिस का नाम आता जाय उसी का स्पर्श करना चाहिये यहसब मूलही में स्पष्ट है ॥ ३ ॥

अथध्यान । रक्ताम्बर परिच्छिन्नां रक्ताभरणभूषिताम् । गुंजाहार समायुक्तां षोड़शाब्देनयुवतीं पीनोन्नतपयोधरांरक्ता सनोपविष्टां रक्तचन्दनलिप्ताङ्गी भक्तानाञ्चशुभप्रदाम् । बद्धपद्मासनामक्षमाला धरां सदासुरींध्यात्वा ततोयजनमारभेत् ।

रक्त (लाल) वस्त्र धारण करने वाली, लाल वर्ण वाले अलंकारों से अलंकृत, गुंजा (घोंहट-नियों की) माला धारण करने वाली, सोलह वर्ष की युवति कठोर (पुष्ट) और ऊंचे

स्तनों वाली लाल आसनपर स्थित, लाल चन्दन से शरीर को लिप्त करे हुए १ पद्मासन लगाने वाली भगवती आसुरी देवता का सौम्य दृष्टीसे ध्यान करके होम करे ॥ ४ ॥

१ वामोरूपरि दक्षिणं नियमतः संस्थाप्य वामंतथा दक्षोरूपरि पश्चिमेन विधिना धृत्वा कराभ्यां धृतम । अङ्गुष्ठं हृदये निधाय चिबुकं नासाग्रमालोकयेदेतद्व्याधिविकार नाशनकरं पद्मासनं प्रोच्यते ॥ अथवा– उर्वोरुपरि विन्यस्य सम्यक् पादतले शुभे । अंगुष्ठौच निबध्नीयाद्धस्ताभ्यां व्युत्क्रमात्ततः । पद्मासनमिति प्रोक्तं योगिनां हृदयंगमम् ॥

यस्याग्रे प्रेतसंस्थां सुफण वलयां रक्तवर्णां त्रिनेत्रां कोट्यादिप्रकाशां मरकत मणिवन्नीलवर्णां सुवर्णां पंचास्या सुग्रदंष्ट्रं हि मकरं शिखरां चानवस्त्रोपवीतां भक्ता-

भीतिं दधानां सकल भय हरा मासुरी चिन्तयेताम् ॥ ५ ॥

जिनके आगाही प्रेतस्थितहैं, सर्पोंके वलय (खंडुए) धारण करने वाली, रक्तवस्त्र तथा तीन नेत्र वाली, करोड़ों सूर्यकी समान प्रकाश वाली, मरकत मणिकी समान नीलेवर्ण करके युक्त, पड्‌मनुखी, चंद्रमाके समान सुन्दर रेशमीवस्त्र और रेशमकी का यज्ञौ पवीत धारण करने वाली, अपने अनन्य भक्तोंको अभयदायिनी और समस्तभय हरनेवाली ऐसीआमुरी देवीका ध्यानकरै ।५।

वर्षैर्षोडश भिर्मिता मरि कुलच्छेदौघ विध्वंसिनीं सम्यक् कुन्तल धारिणीं कुश महा नागात्रिशूलानिच खड्गं मुद्गर तोमरे वनकरैः शक्तिं निजैर्दक्षिणैः पाशामित्ति कपाल दण्ड डमरु खट्वांग खेट धनुः ॥ वामे खेटक पट्टिशैः करतले शुभैर्वहन्तीं

मुदा व्यक्ता व्यक्त सम्मुद्भवैक जननीं
कारुण्य कल्लोलितां ताराचक्र परिच्छिन्नां
ग्रहगणैः सेव्यां पिशंगीं जटां बिभ्राणां
कटकेश्वरीं नतजनां सन्तर्पयन्तीभजे ६।७

सोलहवर्षकी युवा अवस्था वाली, शत्रुओंके समूह और पापोंके समूहका विनाश करने वाली, सुन्दरकेश कलापसे युक्त कुश मक्षा नाग, त्रिशूल रथांग तोमरऔर शक्ति धारण करने वाली तथा दक्षिण हाथमें पाश भिन्दी कपाल दण्ड डमरु खड्ग खेटक और धनुष धारण करने वाली एवं वामहाथमें शुभखेटक और पट्टिश को आनन्द पूर्वक धारण करती हुई नष्ट और प्रगट सम्पूर्ण वस्तुओंकी उत्पन्न करने वाली करुणाकी लहरियोंसे युक्त तारामण्डल करके चारों ओरसे वष्टित और ग्रहगणों करके सेवन करीहुई, पिशंग वर्णकी जटाओंको धारण करने वाली प्राणी मात्रकी ईश्वरी तथा भक्तोंको सन्तुष्ट करने वाली ऐसीआसुरी देवीका हम भजन करतेहैं ॥ ६ ॥ ७ ॥

अथ आसुरी मन्त्र ।

ओं श्रीं ह्रीं क्लीं नमो कटुकं कटुक पत्रेसुभगे आसुरीरक्तवाससे अथर्वणस्य दुहिते अघोरे अघोरे कर्म कारके अमु- कस्यमतिं दह दह उपविष्टयांगं हनहन पच पच मथ मथ तावद्दह दह तावत्पच पच यावन्मे वशमायाति स्वाहा। इति अयुतं जपः ।८।

इस मन्त्र को दश हजार जप करे तब यह मन्त्र सिद्ध होता है ॥

पुरश्चरणकेजपकासंकल्प ।

गुह्याति गुह्यगोमित्वं गृहाणास्म त्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्र

सादादिहास्थितः । अनेन मम वाञ्छित फलसिद्धिरस्तु ॥ ९ ॥

अर्थात्—हे देवी । तुम हमारे करे हुए इस जप को ग्रहण करो और तुम्हारी कृपा से हमारे समस्त कामों में सिद्धि हो क्योंकि—तुम सम्पूर्ण गोपनीय कार्यों को नीके प्रकार से जानती हो ॥ इस जप कर के हमारे मनोरथ की सिद्धि हो ॥ ९ ॥

अथ अभिचार (प्रयोग)

राजनं वशी कर्तुकामः- आसुर्यास्तु पिष्टायाः प्रकृतिं कृत्वा अर्के समाद्भिरग्निं प्रज्वाल्य दक्षिणपादाद्भ्य शस्त्रेण छित्वा घृताक्तां अष्टोत्तरशतं जुहुयात् । होमे समाप्तवश मायाति ॥ १० ॥

जो पुरुष राजा को अपने वश में करना चाहता हो उस को चाहिये कि राई को पीस कर राजा की

आकृति बनावे और आकके वृक्षकी समिधाओं से अग्निको प्रदीप्त कर के घृत के साथ १०८ आहुती दे इस प्रकार राई और घृतकी १०८ आहुती देने से होम समाप्त हो जाने पर राजा वश में हो जाता है। और उस को दाहिने पैर से दबाकर शस्त्रसे छेदनकरे ।१०।

स्त्रियं वशीकर्तु कामः- आसुर्यास्तु पिष्टेन स्त्री प्रकृतिं कृत्वा वाम पादारभ्य घृताक्तामष्टोत्तरशतं जुहुयात् होमे समाप्ते वशमायाति सप्ताहे वा । ११ ।

जो पुरुष स्त्री को वश में करना चाहता हो वोह राई को पीस कर स्त्री की आकृति बनावे, उसे बायें चरण से दाब कर घृत के साथ राई की १०८ आहुति दे, होम समाप्त होजाने पर स्त्री वश में होजायगी। अथवा होम की समाप्ति से सात दिन पीछे बस में हो जायगी ॥ ११ ॥

ब्राह्मणं वशीकर्तुकामः—पलाशस

मिद्भिरग्निंप्रज्वाल्या सुरींघृनाक्तामष्टोत्तर शतजुहुयात् होमेसमाप्ते वशम.याति।१२

जिस पुरुष को यह कामना हो कि मैं ब्राह्मणको अपने स्वाधीन करलूं उसे यह चाहिये कि पलास (ढाक) की समिधाओं से अग्नि को प्रदीप्त करके राई को घी में मिलाकर १०८ वार होमकरे होमकी समाप्ति हो जाने पर ब्राह्मण अवश्य वश में होजायगा ।१२।

क्षात्रियंवशीकर्त्तुकामः—आसुरीघृता क्ता मष्टोत्तरशतं जुहुय तुहोमान्तेवशमायाति

क्षत्रिय को वश में करने की कामना से राई और घृत इन दोनों को मिला कर १०८ वार हवन करे होम पूर्ण होने पर क्षत्रिय वशीभूत होजायगा ॥ १३ ॥

वैश्यंवशीकर्त्तुकामः—आसुरीं लवण मिश्रां त्रिसन्ध्य मष्टोत्तरशतं जुहुयात् होमेसमाप्तेवशमायाति ॥ १४ ॥

यदि वैश्य को वश में करनेकी कामना होय तो राई और लवण इनदोनोंको एकत्रित करके तीनोंकाल१०८ वार (एक एक समय में एकसौ आठ २ वार) होमकरे होम समाप्त होजाने पर वैश्यअवश्य वशीभूत होगा

शूद्रवशीकर्त्तुकामः—आसुरीक्षीराक्तां अष्टोत्तरशतं जुहुयात्, होमान्तेवशमायाति ॥ १५ ॥

यदि शूद्र को वश करने की कामना करे तो राई और दूध को मिला कर१०८वार हवन करे होमसमाप्त होजाने पर शूद्र वशमें होजायगा ॥ १५ ॥

अथ नेत्रस्फोटनम् ॥

अर्क समिद्भिरग्निं प्रज्वाल्य आसुरीमर्कक्षीराक्तां अष्टोत्तरशतंजुहुयात्यस्य नाम गृह्णाति तदक्षिणीस्फोटयति ।१६

आक की समिधाओं से अग्नि को प्रज्वलितकर के

राई और आक का दूध इन दोनों को मिला कर १०८ बार हवन करे, हवन करते समय जिस का नाम लिया जायगा उसी के नेत्र फूट जांयगे। १६।

होमेन प्रत्यानयने आसुरीं क्षीराक्ता मष्टोत्तरशतं जुहुयात् होमान्ते स्वस्थो भवति ॥ १७ ॥

राई को दूध में मिला कर १०८ आहुति दे, होम की समाप्ति हो जाने पर स्वस्थ होजाता है ॥१७॥

मारणम् ॥

निम्बकाष्ठनाग्निंप्रज्वाल्यासुरीं कटु तैलाक्तां अष्टोत्तरशतं जुहुयात्होमेनसप्ता हान्म्रियतेरिपुः ॥ १८ ॥

नीम की लकड़ियों से अग्निको प्रदीप्त करके राई में कुट की (अथवा पटोल) का तेल मिला कर १०८ बार हवन करे होम के दिन से सातवें दिन शत्रु की

मृत्यु होती है ॥ १८ ॥

अश्व क्षुर रोमाणि आसुरीं चैकी कृत्ययस्य नाम्ना अष्टोत्तरशतं जुहुयात् स अकस्मादपस्मारेण गृह्यते ॥ १९ ॥

अश्व (घोड़े) के खुर और रोमों को राईमें मिला कर जिस व्यक्तिका नाम ले के १०८ बार हवन करे, उस को अकस्मातही अपस्मार रोग उत्पन्न होजाताहै ॥

पुनः आसुरी घृताक्तामष्टोत्तर शतं जुहुयात् तस्य देहो ज्वरेण गृह्यते ।२०।

फिर राई को घृत मे मिलाकर जिसके नामसे१०८ आहुति दे तो उसे ज्वर आजाता है । २० ।

हांमनप्रत्या नयनआसुरीं क्षीराक्तां जुहुयात् स्वस्थो भवति । २१ ।

राई को दूध में मिला कर १०८बार हवन करनेसे वोह रोगी स्वस्थ होजाता है । २१ ।

आसुरीं चिताभस्म महामांस मद्य मेकी कृत्व शताभिमन्त्रितेन चूर्णेन नेत्रा ञ्जनेन उन्मत्तो भवति ॥ २२ ॥

राई, चिता की भस्म, महा मांस और मद्य इन सबको एकत्रित कर के पूर्वोक्त आसुरी मन्त्र से १०० बार अभिमन्त्रित कर के चूर्ण बनावे, उसचूर्णको नेत्रों में लगाने से उन्मत्त हो जाता है ॥ २२ ॥

प्रत्यानयने आसुरीं अजाक्षीरेण जुहुयात् होमेन स्वस्थो भवति ।२३।

यदि इस व्याधी को दूर करना होय तो राई को दूध में मिलाकर होम करने से स्वस्थ होजाता है ।

आसुरी निम्बपत्राणि यस्य नाम्ना जुहुयात् होमेसमाप्ते स विस्फोटकैर्गृह्यते

नीम के पत्ते और राई इन दोनों को मिला कर जिस का नाम ले के हवन करे, होम समाप्त होने पर

उस के विस्फोटक (फोड़े) निकल आते हैं । २४ ।

प्रत्यानयने घृताक्तामासुरीं जुहुयात् होमान्तेस्वस्थो भवति । २५ ।

यदि उक्त रोग दूर करना हो तो राई को घृत में मिला कर होम करना चाहिये होम समाप्त होजानेपर रोग दूर होकर स्वस्थ होजाता है ॥ २५ ॥

वशीकरण ।

तगरं कुष्टं जटामांसीं आसुरीपुष्पं चषां चूर्णं कृत्वा शतवाराभिमन्त्रितंयंस्पृशति सदृष्ट्यनुचरोभवति । २६ ।

तगर, कूट, जटामांसी राई के फूल, और उशीर (खश) इनका चूर्ण करके १०० बार मन्त्र पढकर जिसे स्पर्श करे, वोह केवल देखने ही मात्र से अनुचर हो जाता है ॥ २६ ॥

उशीरं तगरं कुष्टं मुस्तासिन्धुफला-

निच । आसुरीं पत्रसंयुक्तांसूक्ष्म चूर्णन्तु-कारयेत् ॥ अष्टोत्तरशताभिमंत्रितेनयं स्पृशतिसवश्यो भवति ॥ २७ ॥

खशखश, तगर, कूठ, मोथा सिंघुवार के फल (अथवा समुद्र फल) राई और राई के पत्ते इन सबको मिलाकर खूब बारीक पीसकर चूर्ण बनावै, उस चूर्णको १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिसे स्पर्श करै वोह अवश्यही वश में हो जाता है ॥ २७ ॥

आसुरी मूल पत्राणि पुष्पाणि च फलानि च नागेन्द्र मद संयुक्तां सूक्ष्म चूर्णन्तुकारयेत् । अष्टोत्तरशताभिमंत्रि-तेनयं स्पृशतिसवश्यो भवति ॥ २८ ॥

राई की जड़ पत्ते, पुष्प और फल इन में गजमद मिलाकर महीन चूर्ण बनावै, उस चूर्णको १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस का स्पर्श करे वोह अपने

वश में होजाता है ॥ २८ ॥

मनःशिला प्रियंगु च भारंगी नाग केशरं। आसुरी पुष्प संयुक्तं सूक्ष्म चूर्णंच कारयेत ॥ अष्टोत्तर शताभि मंत्रि तनयं स्पृशति स वश्यो भवति ॥ २९ ॥

मनसिल, प्रियंगु, भारंगी, नागकेशर, इनमें राईके फूल मिला कर अति महीन पीसकर चूर्ण बनावे १०८ वार उस चूर्णको अभिमन्त्रित करके जिसका स्पर्श करे वोह वश में होजाता है ॥ २९ ॥

आसुरी पुष्पाणि सौवीरांजनं नाग केशरं च घृतानि सूक्ष्म चूर्णंकृत्वा साभि मंत्रितेन चक्षुषा अञ्जयेत, यं निरीक्षेत स वश्यो भवति ॥ ३० ॥

राईके पुष्प, सौवीरका चूर्ण नागकेशर इन सबको बरीक पीसकर घृतमिलावे और उपरोक्त आसुरी मन्त्रसे अभि

सन्त्रिम करके नेत्रों में लगावै फिर जिसे देखे वोह वशमें होजाता है ३०

आसुरी पञ्चांगेन स्वात्मानं धूपयेत् तस्य गन्धं य आजि घृक्षति स वश्यो भवति ॥ ३१ ॥

राईके १ पंचांगको खूब बारीक पीसकर उसचूर्णसे अपने शरीर को धूपदे, उस धूपकी सुगन्धिको जोकोई सूंघेगा वोह अवश्यही वशमें हो जायगा ॥ ३१ ॥

सर्व कामिक प्रयोग

आसुरीमसिधां मधुघृताक्तां जुहुयात् सर्वकार्यसिद्धिर्भवति पुत्रार्थी पुत्रंलभते३२

राईकी लकडियोंको शहत और घृतमें मिलाकर होम करने से पुत्रार्थीको पुत्र प्राप्त होताहै। विशेष क्या कहैं इस प्रयोगसे सबकाम सिद्ध होजाते हैं ॥ ३२ ॥

१ पत्र, फूल त्वचा, और मूल, यह पंचांग कहाता है।

तत्स्वरूपंकृत्वा खदिरनिम्बार्कसमिद्भिः अष्टोत्तर शतं जुहुयात् । क्षीरमधु दधिघृताक्तां आसुरीं दशसहस्राणि जुहुयात् । पुरुषः शतायुर्भूयात् ॥ ३३ ॥

मनुष्य का आकार बनाके खैर, नीम, और आक की समिधाओं से १०८ बार हवन करें । तथा दूध, शहत और घृत में राई को मिला कर १०००० आहुति देने से पुरुष की १०० वर्ष की आयु हो जाती है ॥

राज्यार्थी आसुरींदधिमधुघृताक्तां दशसहस्रं जुहुयात् राज्यंलभते पुरुषः

राई को दधि, शहत और घी में मिला कर दस सहस्र आहुति देने से राज्य की कामना करने वाले पुरुष को अवश्य ही राज्यको प्राप्ति होती है ॥

राजकुलेवा सुवर्णार्थी आसुरीपुष्पाणि दशसहस्राणि जुहुयात् सुवर्णसहस्रं

लभते ॥ ३५ ॥

राई के पुष्पो से दश सहस्र हवन करने से राज्य द्वार से सहस्र भार सुवर्ण प्राप्त होता है ॥ ३५ ॥

परीक्षिकस्यासुरीपल्लवै रष्टशताभि मन्त्रितंकलशं संपूर्ण कृत्वात्मानं स्नापयेत् । अनुष्ठानेनानेनालक्ष्मींमिचतिदुर्भगा सुभगा भवति चातुर्थिकान्नरोमुक्तोभवति

राई के पत्तों से कलश को परिपूर्ण भर के १०८ बार अभि मंत्रित कर स्वयं उस से स्नान करे । इस प्रकार अनुष्ठान करने से संपूर्ण दरिद्र दूर हो जाताहै दुर्भगा स्त्री सुभगा होजाती है एवं चातुर्थिक ज्वर दूर हो जाता है । ३६ ।

मिश्रित प्रयोग ॥

आसुरी दश सहस्र समिधां दधि तिल मिश्रितां जुहुयात् स्त्रीणां नष्टशल्य

वृद्धिर्भवति । ३७ ।

राई की दश सहस्र समिधाओंको दही और तिलों के साथ होम करने से स्त्रियों का घाव वृद्धि को प्राप्त हो जाता है ॥ ३७ ॥

आसुरी सप्ताङ्गुलशल्यं गृहे बध्वा महिषी पयस्विनी भवति । ३८ ।

राई की ७ अंगुल की लकड़ी लेके घरमें बांध देने से महिषी (भैंस) दूध अधिक देने लगती है ॥३८॥

आसुरी पञ्चांगशल्यं लोह मिश्रितं स्मशाने निक्षिपेत् यस्याभिधानेन तस्य शरीरंशुष्यति ॥ ३९ ॥

राई का पंचांग (फल, फूल, मूल, पत्ते, त्वचा) शाल और लोह को जिस का नाम ले कर स्मशान में डाले उस का शरीर कृश हो जाता है । ३९ ।

आसुरी मन्त्र व्युत्क्रमेण लिखित्वा

अयुतं जपः मृगमांसे नायुतंहोमः शत्रु भयो भवति । ४० ।

आसुरी मन्त्र को उलटा लिख कर दश सहस्र जप करे और मृग के मांस से दश सहस्र होम करे तो शत्रु को भय उत्पन्न होता है । ४० ।

इति श्री अथर्व वेदान्तर्गता सुरीकल्पो मुरादाबाद निवासिब्रजरत्नभट्टाचार्य्यकृतःसमाप्त

❋ अथ सिद्ध योग ❋

ब्रजरत्नभट्टाचार्य्यकृत रत्नप्रभा

भाषा टीका सहित

अथ कालिका मन्त्र निरूपणम् ॥

अथ वक्ष्यामिते देविकालिकां भव दुःखहां । यां ज्ञात्वा साधको भोगान् मुक्त्वा मोक्ष मवाप्नुयात् । १ ।

हे देवि ! अब हम तुम्हारे प्रति सान्सारिक दुःखों का विनाश करने वाली कालिका के वृत्तान्त का वर्णन करते हैं, कालिका भगवती को जान कर साधक जन विविध भांती के भोगों का उपभोग कर के मोक्ष लाभ करता है ॥ १ ॥

मूकोऽपि कवितामेति धनेनच धनाधिपः ॥ वलेन पवनः साक्षात् रूपेण चमनोहरः ॥ २ ॥

कालिका के मन्त्र का जप करने से मूक को कविता करने की शक्ति उप लब्ध होजाती है, धन में कुवेर की समान और साक्षात् पवनकी समान बलवान् एवं मनोहर रूपवान हो जाता है ॥ २ ॥

मन्त्रो द्धारं शृणुस्वेमं गुह्यात्गुह्यतरंमहत् । वर्गादिवन्हिमारूढं वामनेत्रेण संयुतम् ॥ चन्द्रार्ध बिन्दुना सुग्धि भूषितं

परमेश्वरि ॥ खान्तादि वामनेत्रस्थं वन्हिचन्द्रसमान्वितम् ॥ वीजरत्नमिदंप्रोक्तं साक्षात् कल्पद्रुमाप्रिये । मादनंचन्द्रवीजस्थंभूतस्वर समान्वितम् ॥ चन्द्रार्द्धविन्दु भूषाढ्यं संपूर्णसिद्धिदंमनुम् ॥ ३ ॥

हे महेश्वरि ! गुह्य से भी अतिशय गुह्य मन्त्रोद्धार का वर्णन करते हैं उसे तुम श्रवण करो वर्गादि (क) वन्हि (र) और वाम नेत्र (ई) एवं चन्द्रार्द्ध विन्दु [ँ] इन सब के संयोग से [क्रीँ] यह वीज मन्त्र सिद्ध होता है हे प्रिये ! येही कालिका देवी का उत्तम बीज मन्त्र है हे देवि ! साधक के मनोरथ सिद्ध करने के लिये इसे साक्षात् कल्प वृक्ष ही जानना चाहिये । कारण कि ऐसी कोई भी सिद्धि नहीं है जो इस वीज मन्त्र का जप करने से उपलब्ध न होती हो ॥३॥

अस्यैवाशेषमाहात्म्यं वक्तुंनाहं महे-

श्वरि । तथापि कथ्यते देवि । संक्षेपाद्
स्ययत् फलम् ॥ मोक्षार्थी लभेत मोक्षं
कैवल्यं परमं पदम् । देवि, रूपं जगत्
पश्येत् द्वैधतत्रविवर्जयेत् ॥५॥

यद्यपि हे देवि ! इस कालिका बीज मन्त्र का संपूर्णतया महात्म्यवर्णन करने की मेरी सामर्थ्य नहीं है, तथापि संक्षेपसे हम उसका माहात्म्य वर्णन करते हैं ॥ उक्त कालिका मन्त्र का जप करने वाला व्यक्ति यदि मोक्ष की भी अभिलाषा करे तो उसे मोक्ष और परम पद कैवल्य की प्राप्ति होती है । साधक व्यक्ति को चाहिये कि भेद बुद्धि को छोड़ कर समस्त जगत को कालिका मय अवलोकन करे ॥ ५ ॥

अथ लक्ष्मी गणेश मन्त्रः ।

तारोरमाचन्द्रयुक्तः खान्तः सौम्या
समीरिणः । ङन्तोगणपतिस्तोयं स्वरान्ते

दम्र्वच ॥ जनंमे वशमादीर्घं वायुः पावक कामिनी । अष्टाविंशति वर्णोऽयं मनुः धन समृद्धिदः । १ ।

तार (ॐ) रमा (श्रीं) चन्द्रयुक्त खान्त (गं) सौम्य समीरण (य) अर्थात्—"ओं श्रीं गं सौम्याय गणपतये वरवरद सर्व जनं मे वशमानय स्वाहा" यह अट्ठाईस वर्णात्मक लक्ष्मी गणेश का मन्त्र है ॥

लक्ष्मी विनायको वीजं रमाशक्तिर्व सुप्रिया । अन्तर्यामी मुनिश्छन्दो गायत्री देवतामनोः ॥ २ ॥

लक्ष्मी विनायक मन्त्र के अन्तर्यामी ऋषि गायत्री छन्द लक्ष्मी विनायक देवता श्री बीज स्वाहा शक्ति और निज अभीष्ट सिद्धि के लिये जप करने में विनियोग है ॥ २ ॥

रमा गणेश बीजाभ्यां दीर्घाढ्याभ्यां

षडङ्गकम् । दन्ताभये चक्रदरौ दधानं कराग्र गस्वर्ण घटं त्रिनेत्रम् । धृताब्जयालिंगित मब्धिपुत्र्या लक्ष्मी गणेशं कन गभमीडे ॥ ३ ॥

ओंगं से हृदय को, श्रीं गीं से सिर को, श्रू मँ से शिखा को स्पर्श करे, येही षडंगन्यास का क्रमहै। अब ध्यान का वर्णन करते हैं—दक्षिण हाथों में दन्त और शंख, एवं वाम हाथों में अभय और चक्र धारण करने वाले, जिन के शुण्डाग्र भागमें सुवर्ण घटविराजमान है, जिन के सुन्दर तीन नेत्र हैं, अब्जकमल धारिणी लक्ष्मी जिन का आलिंगन कर रही हैं स्वर्ण की समान दीप्तिमान ऐसे गणेश जी का हम ध्यान और स्तुति करते हैं। ३।

चतुर्लक्षंजपेन्मन्त्रं समिद्भि बिल्व शाखिनः । दशांशं जुहुयात् पीठे पूर्वोक्ते

न अपूजयेत् ॥ ४ ॥

उक्त मन्त्र का चार लाख जप करना चाहिये और बेल की समिधाओं से दशांश हवन कर, और पूर्वोक्त पीठके उपर उस का पूजन करे ॥ ४ ॥

आद्या वंगानि संपूज्य शक्तीरष्टा विमायजेत् बलाका विमला पश्चात् कमला वनमालिका । विभीषिकामालिका चशां करी वसुवालिका । शंखपद्मनिधी पूज्यौ पार्श्वयोः दक्षवामयोः ।५।

प्रथम अंगों की पूजा कर के बलाका, विमला, कमला, वनमालिका, विभीषिका, मालिका, शांकरी और वसुमालिका इन आठ शक्तियों का पूजन करे । एवं दक्षिण और वाम पार्श्वों में क्रम से शंख और पद्मनिधी की पूजा करनी कर्तव्यहै ।५।

लोकाधि पांस्तदस्त्राणितद्वहिः परि

पूजयेत् । एवं सिद्धे मनौमन्त्री प्रयोगान् कर्तुमर्हति ॥ ६ ॥

तदनन्तर लोक पालों और इन के अस्त्रों का वहिर्भाग में पूजन करे, इस प्रकार मन्त्र की सिद्धि हो जाने पर मन्त्र शास्त्री को चाहिये कि प्रयोगों का अनुष्ठान करे ॥ ६ ॥

उरो मात्रे जले स्थित्वामंत्री ध्यात्वार्कमंडले ॥ एवं त्रिलक्षं जपतो धन वृद्धिः प्रजायते ॥ ७ ॥

छाती छाती जल में खड़े हो मन्त्र शास्त्री को चाहिये कि सूर्य्य मंडल में ध्यान करे ॥ इस विधि से तीन लाख जप किया जाय तो धन की वृद्धिहोती है

विल्वमूलं समास्थायतना वज्जलेफलं हितत्। अशोककाष्ठैर्ज्वलितेवन्हाधाज्याक्त

तण्डुलैः ॥ होमतो वशये द्विश्वमर्ककाष्ठं शुचावपि ॥ खादिराग्नौ नरपतिं लक्ष्मीं पाय स होमतः ॥ ८ ॥

विल्व (बेल) वृक्ष की जड़ में बैठ कर तीन लक्ष जप करने से धन की वृद्धि होती है। अशोक वृक्षकी वा आक की समिधाओं से अग्नि को प्रदीप्त कर घृत और चावलों से हवन करे तो संसार भर का वशीकरण होता है। खदिर (खैर) की समिधाओं द्वारा हवन करने से राजा वश में होता एवं खीर अथवा मावे का हवन करने से लक्ष्मी वशमें होती है ॥८॥

अन्न पूर्णेश्वरी मन्त्र।

अन्न पूर्णेश्वरी मन्त्रं वक्ष्ये ऽभीष्ट प्रदायकम् ॥ कुवेरो यामुपास्याशु लब्ध वान्निधिनाथ ताम् ॥ १ ॥

अभिष्ट सिद्धि करने वाले अन्न पूर्णेश्वरी की उपासनाश्रय हम वर्णन करते हैं, उन्ही अन्न पूर्णेश्वरी की

उपासना करते कुवेरने धनाधीशता की प्राप्तीकीथी ।१।

शंभोः सख्यं दिगीशत्वं कैलासाधीशतामपि ॥ वेदादिगिरिजा पद्मा मन्मथो हृदयं भगः ॥ वतिमाहेश्वरी प्रान्तेन्नपूर्णे दहनांगना ॥ प्रोक्ता विंशतिवर्णेयं विद्या स्याद् द्रुहिणो मुनिः ॥ २ ॥

महादेव की मित्रता, दिशाका स्वामित्व और कैलाशकी अधीश्वरता कोभी कुवेरने इसीके प्रतापसे अधिगत कियाथा वेदादि (ओं) गिरिजा (ह्रीं) पद्मा (श्रीं) और मन्मथ (क्लीं) अर्थात् ओं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः भगवति माहेश्वरी अन्न पूर्णे स्वाहा " यह बीस अक्षरका मन्त्र है ॥ २ ॥

कृतिश्छन्दो ऽन्नपूर्णेशी देवता परिकीर्त्तिता ॥

इस अन्न पूर्णा मन्त्रके ब्रह्मा ऋषि, कृति छन्द,

अन्नपूर्णा श्री देवता और अपनी अखिल सिद्धिके लिये जप करनेमें विनियोग है ॥

लक्षं जपो ऽयुतं होमश्चरूणा घृत संयुतः ॥ जयादि नवशक्त्याढ्ये पीठे पूजा समीरिता ॥ ३ ॥

उक्त मन्त्रका लक्षजप एवं घृत और चरु से दश सहस्र हवन करना चाहिये अथच जयादि नवशक्ति से युक्त पीठके ऊपर पूजनकरै ॥ इस मन्त्रका जप करनेसे अन्न धन जन आदि समस्त सिद्धियोंका लाभ होताहै ३

हनुमानजीकामन्त्र ।

"ह्रौं ह्स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं हनुमतेनमः" अस्यश्रीहनुमन्मन्त्रस्य राम चन्द्र ऋषि, जगतीच्छन्दः, हनुमान्, देवता ह्स्रौं बीजम्, ह्स्फ्रें शक्तिः ममाभीष्ट

सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ॥

श्री हनुमानजी के उक्त मन्त्रके रामचन्द्र ऋषि जगती छन्द, हनुमानजी देवता, ह्सौं बीज ह्स्फ्रें शक्ति और अपने मनोरथकी सिद्धिके निमित्त जप करने में विनियोग है ॥

एवं ध्यात्वा जपे द्वर्क सहस्त्रं जित मानसः ॥ दशांशं जुहुयात् व्रीहीं नृपयो दध्या ज्य संयुतान् ॥

हनुमान जी का ध्यान करने के अनन्तर मनो निग्रह पूर्वक बारह सहस्र जपकरें और धान दूध दही तथा घृतसे दशांश हवन करें ॥

एवं कृते महा भूत विष चौरा द्युपद्रवाः नश्यन्ति क्षण मात्रेण विद्वेषिग्रहदानवाः

इस प्रकार करने से महा भूत विष और चौर आदि के उपद्रव एवं दुष्ट ग्रहों और दानवों के भी

उपद्रव तत्काल ही विनाश को प्राप्त होजाते हैं ॥

अष्टोत्तर शतं वारि मन्त्रितं विष नाशनम् । रात्रौनव शतं मन्त्रं जपेद्दश दिनावधि । यो नरस्तस्य नश्यन्तिराज शत्रूक्षभीतयः ॥

इस मन्त्र के द्वारा जल को एकसौ आठ बार अभिमन्त्रित कर पिलाने से विष का नाश होता है ॥ जो मनुष्य इस मन्त्र को दश दिन पर्यन्त रात्री में नौ सौ जपता है, राजा और शत्रु से उत्पन्न हुई भय जनित आपत्तियें उस की समस्तविनष्ट होजातीहैं ।

अभिचारोक्ष भूतोक्ष ज्वरेतन्मात्रितै र्जलैः । भस्मभिस्सलिलैर्वापि ताडयेज्ज्य रिणःक्रुधा ॥ दिनत्रया ज्ज्वरान्मुक्तः ससुखं लभते नरः । तन्मं त्रितौपधंजग्ध्वामीरोगो

जायते ध्रुवम् ॥

अभिचार अथवा भूत जनित ज्वर हो तो भस्म अथवा जल को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर ज्वर के रोगीका मर्जनकरे, तो तीन दिन में ज्वर से मुक्ति लाभ कर वह मनुष्य सुख का उपभोग करता है। और उक्त मन्त्र से अभि मन्त्रित की हुई औषधि भक्षण करने से रोगी अवश्य ही निरोगहोजाताहै ॥

तन्मान्त्रितं पयः पीत्वायोद्धुं गच्छे-न्मनुंजपन् । तज्जप्त भस्मलिप्तांगः शस्त्र संघैर्न वाध्यते ॥

हनुमान जी के मन्त्र से अभिमन्त्रित किये हुए जल अथवा दूध को पीकर मन्त्र का जप करता करता युद्ध करने के लिये यात्रा करे, और उसी मन्त्र से अभिमन्त्रित की हुई भस्मी को अपने अंग में लगावे तो शस्त्र जनित बाधा उसे व्यथित नहीं करती।

शस्त्रक्षतंब्रणः शोको लूतास्फोटो

ऽपिभस्मना । त्रिमंत्रितनसंस्पृष्टाः शुष्य न्त्य चिरतो नृणाम् ॥

तीन वार मन्त्र पढ कर भस्म लगाने से शस्त्र जनित व्रण, स्फोटक और सूजन आदि समस्त सूख जाते हैं ॥

सूर्य्यास्तमय मारभ्य जपेत् सूर्य्योद यावधि । कीलकं भस्म चादाय सप्ताहा वधि संयतः ॥ निखनेद्भस्मकीलौ तौ विद्विषां द्वार्य्यलक्षितम् । विद्वेषं मिथआ पन्नाः पलायन्तेऽरयोऽचिरात् ॥

कील और भस्म को हाथ में ले सूर्यास्त से सूर्यो दयपर्यन्त नियम पूर्वक सात दिन तक मन्त्र का जप करे, फिर उस कील और भस्म को गुप्तरीतिसे शत्रुओं के द्वार में गाड़ दे, ऐसा करनेसे शत्रु लोग परस्पर वैर भाव कर के बहुत शीघ्र पलायमान होजाते हैं ॥

अभिमन्त्रित भस्माम्बु देहचन्दन संयुतम् । खाद्यादियोजितं यस्मै दीयते सचदासवत् ॥

भस्म जल अथवा चन्दन को अभिमन्त्रित कर भोजन की वस्तु में मिला कर जिसे दिया जाय वह दास की समान हो जाता है ॥

क्रूराश्चजन्तवोऽनेनभवन्ति विधिना वशाः । ईशानदिक्स्थमूलेनभूतांकुशतरोः शुभाम् ॥ अंगुष्ठमाचांप्रतिमां प्रविधाय हनुमतः । प्राण संस्थापनं कृत्वा सिन्दूरैः परिपूज्यच । गृहस्याभिमुखे द्वारे निरवने न्मंत्रमुच्चरन् ॥ भूताभिचार चौराग्नि विषरोगनृपोद्भवाः । संजायन्ते गृहेतस्मिन्न कदाचिदुपद्रवाः । प्रत्यहं धनपुत्राद्यैरेधते

तद्गृहं चिरम् ॥

इस मन्त्रका विधि पूर्वक जप करने से क्रूर जीव जन्तुभी वशीभूत होजातेहैं। करंज वृक्षकी ईशान कोणकी ओर वाली मूलने एक अंगुष्ट प्रमाण की हनुमान् जीकी शुभमूर्ति बनावे, उसमें प्राण प्रतिष्टा कर सिन्दूर चढाके पूजाकरे, फिर मन्त्रोच्चारण पूर्वक घरके साम्हनेही द्वारमें उसे गाढ़दे, ऐसा करने से भूतोंके अनिवार चौर अग्नि विष रोग और राजा संबन्धी उपद्रव उस घरमें कभी भी नहीं होते, एवं धन और पुत्रादिकी उस घरमें प्रतिदिन वृद्धि होती है ॥

अथ शिवमन्त्र ॥

"ओं ह्रौं ह्रीं जूं सः प्रपन्न पारिजाताय स्वाहा,,

इस मन्त्रका सवालक्ष जपकरनेसे सिद्धि होतीहै., सिद्धहो जाने पर रोजगार में लाभ और धनकी प्राप्ती होती है ॥

शीतलामें झाड़ादेनेका मन्त्र

शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता ॥ शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः

जिसके शीतला (माता) निकली हों, इस मन्त्र पढ़कर मोरके पंख अथवा नीमकी डालीसे उसे झाड़ा देने पर शीतला की बाधा दूर होजाती है ॥

महा मृत्युंजय (सजीवनी विद्या)

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्वारुकमिव बन्धना न्मृत्यो मुक्षीय मा मृतात् इति ।

इस मन्त्रका जपकरनेसे महामारी आदि विषम रोगोंका निवारण होकर मृत्यु काभी विजय होताहै ॥

लक्ष्मी मन्त्रोद्धार ।

ओं ह्रीं श्रीं लक्ष्मि महा लक्ष्मीमर्व कामप्रदे सर्वे सौभाग्य दायिनि अभिमतं प्रयच्छ सर्वे सर्वगते सुरूपे सर्व दुर्जय विमोचिनि । ह्रूं सः स्वाहा ॥

चार लक्ष जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होता है और नियमपूर्वक जपकरनेसे यथेष्टधनका लाभ होताहै।

श्री याक्षिणी मन्त्र

श्रीं श्रीं याक्षिणी हं हं हं स्वाहा ॥

अस्यवट याक्षिणी मन्त्रस्य विश्रुवा ऋषि पंक्तिश्छन्दः, यक्षिणी देवता, ममाभीष्ट सिध्यर्थे जपे विनियोगः

इस वट यक्षिणी मन्त्रकी विश्रवा ऋषिपंक्ति छन्द,

यक्षिणी देवता, और अपने सकल मनोरथों की सिद्धि के लिये जप करने में विनियोग है ॥

एवं जपे लक्षसंख्यं जयापुष्पैर्दशांशनः ॥ जुहुयात पूर्ववत् पीठे पूर्वोक्ते प्रयजेदिमाम् ॥ प्रजपेदयुतं नित्यं सहस्रं हवनं चरेत् ॥ मधूक पुष्पैर्मध्वक्तै स्तत् काष्ठैश्च हुताशने ॥ संतुष्टैवं कृते देवी प्रयच्छेदं जनंशुभम् ॥ येनाक्त नयनो मन्त्री निधिं पश्यं क्षरागतम् ॥

इस मन्त्र का एक लक्ष जप करै, और जपा के पुष्पों से दशांश हवन करै फिर प्रतिदिन दस सहस्र जप और हवन करै, महुए के पुष्पों में मधु मिला के महुए ही की समिधाओं से हवन करना कर्त्तव्य है, इस प्रकार करने से देवी सन्तुष्ट हो ऐसा उत्तम अंजन प्रदान करती है जिसे नेत्रों में आंजने से अनुष्ठान

करने वाला भूमि में गड़ी हुएभी धनका अवलोकन करने लगता है ॥

गोपाल सुन्दरी मन्त्र

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा ॥

अमुंमन्त्र जपेल्लक्षं दशांश पाय सांधसा ॥ जुहुया द्वेष्णवे पीठे पूजयेत् सुन्दरीं हरिम् ॥ एवं यो भजते नित्यं श्री मद्गोपाल सुन्दरीम् ॥ सर्वान् कामान वाप्यान्ते सायुज्यं ब्रह्मणोव्रजेत् ॥

इस मन्त्रका लक्ष जप करने से सिद्धि होजाती है, फिर सावेंमे दशांश हवन करे, शुभ विधिसे जो कोई नित्यही गोपाल सुन्दरीका भजन करता है उसे इस

लोकमें समस्त कामनाओंकी सिद्धि एवं अन्तमें अक्षयी सायुज्य पदवी का लाभ होता है ॥

मन्त्र

"ह्रीं क्ष्रौं ह्रीं,,

॥ अथवा ॥

"ओं क्ष्रौं ओं,,

जुहुया दुदके तस्य सर्वे नस्यन्तु पद्रवाः ॥ महोत्पात हरोप्येष होमः सर्वे ष्टदो नृणाम् ॥ संस्थाप्य विधिवत् कुम्भ जपेदष्ट सहस्रकम् ॥ अभिषिं चेद्विषा क्रान्तं विष्तार्त्ति निवृतये ॥ विचरन् विपिने चौर व्याघ्र सर्पा कुले नरः ॥

जपन्नमुं मन्त्रवरं नभयं प्राति पद्यते ॥
ईक्षितांनिशिदुःस्वप्नं जपन्मन्त्रानिशांनयेत्
अपाशिष्टंस्वप्नफलंसम्यगादिशतिध्रुवम ।
कर्णनेत्रशिरःकंठरोगान्मन्त्रो विनाशयेत्

पूर्वोक्त दो मन्त्रों मेंसे किसी एकका जप करके उसे सिद्ध करले, तब समस्त उपद्रवों का निवारण होताहै। उक्त मन्त्रों के द्वारा हवन करने से महा उत्पातों की शान्ति और मनुष्यों के अखिल मनोरथों की सिद्धि होती है, विधिवत् घट स्थापन पूर्वक आठसहस्र मन्त्रकाजपकरे, उस अभिमन्त्रित जलसे अभिषेचन करने पर विष जनित व्याधिका निवार होताहै। इस मन्त्रका जप करताहुआ जो मनुष्य वनमें विचरता है उसे चोर व्याघ्र और सर्पादि किसीका भी भय नहीं होता । रात्री में दुःस्वप्नका अवलोकन

करेतो इस मन्त्रका जप करने से शुभ फल होता है। एवं यह मन्त्र कान नेत्र शिर और कंठके रोगों काभी निवारण कर देता है ॥

इति श्री-मुरादा बाद देशिक
ब्रह्मरत्न भट्टाचार्य्य कृत
स्वप्रभा भाषा टीका
सहित सिद्ध योग
समाप्तः

मन्त्रसिद्धि सम्पूर्ण

शुभम् ॥

मैस्मरेज़म जादू

यदि आप अपने घर के मरे हुए मनुष्योंसे बात चीत करना चाहते हैं तो इस पुस्तकके जरिये से कर सकते हैं दाम ।=) डांकखर्च =)

असली कोक शास्त्र

इस में स्त्रियों की परिक्षा और उन के अनेकरोग दूर होने के यत्न पुरुष-परिक्षा नपुं सकता के कारण उन के दूर होनें की अनेक दवा गर्भ रहने के उपाय आदि बहुतसी बातेंहैंदाम ।=) पांचआने डांकखर्च =)

दरजी की पुस्तक

इस पुस्तक में सर्व प्रकार के कपड़े सीने काटने की रीती चित्रों सहित लिखी हैं दाम ।-) डांकखर्च=)

बड़ी भृगु संहिता महाशास्त्र

यह ज्योतिष का सर्व शिरोमणि ग्रंथ भाषा सहित छपा है पंडितों के लिये, पारस पथरी के समान है मूल्य १०) रुपये १५) रुपये २१) रुपये